

---

.. saptashlokIgItA ..

॥ सप्तश्लोकीगीता ॥

Document Information



---

Text title : saptashlokIgItA  
File name : saptashlokIgItA.itx  
Category : gItA  
Location : doc\_z\_misc\_general  
Author : Vyasa  
Language : Sanskrit  
Subject : philosophy/hinduism/religion  
Transliterated by : NA  
Proofread by : NA  
Description-comments : Brihatstotraratnakar 386 pages one, item  
181  
Latest update : January 3, 2014  
Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com  
Site access : <http://sanskritdocuments.org>

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or for commercial purpose without permission.

---

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

---

August 2, 2016

*sanskritdocuments.org*

---

## ॥ सप्तश्लोकीगीता ॥

श्री गणेशाय नमः ।  
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।  
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥ ८-१३ ॥  
स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या  
जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ।  
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति  
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः ॥ ११-३६ ॥  
सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।  
सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥ १३-१४ ॥  
कविं पुराणमनुशासितार-  
मणोरणीयंसमनुस्मरेद्यः ।  
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूप-  
मादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥ ८-९ ॥  
ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।  
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥ १५-१ ॥  
सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो  
मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनञ्च ।  
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो  
वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥ १५-१५ ॥  
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।  
मामेवैष्यसि युक्तवैवमात्मानं मत्परायणः ॥ ९-३४ ॥  
इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु  
ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे  
सप्तश्लोकी गीता सम्पूर्णा ॥

Encoded and proofread NA

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

